देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
Sept. 2025
Vol.-22, Issue-3(2)

Impact Factor
8.642

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

21वीं सदी का साहित्य : नव विमर्श

Special Issue Editor :
Dr. Poornima S.

Special Issue Co-Editor :
Dr. Anuradha P
Ms. V. Amudha

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

70.	21वीं सदी के नारी विमर्श–रेत समाधि	पूर्णिमा. जे, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	393–397
71.	'बुद्धिमानों की मूर्खता' : सुरेंद्र शर्मा के व्यंग्य निबंधों में राजनीतिक विमर्श	प्रिया. एस, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	398–403
72.	21वीं सदी में तमिलनाडु स्थित बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी गृहपत्रिकाओं का प्रकाशन : एक नव विमर्श	श्री एम. संजीवी कनी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	404–411
73.	पर्यावरण विमर्श : साहित्य में पारिस्थितिकी और प्रकृति चिंतन (बाल कहानियों के संदर्भ में)	वेंकट शिल्पा काकि, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	412–416
74.	21वीं सदी के आधुनिक हिन्दी उपन्यास बेहया में केंद्रित नारी	अमरजीत	417–422
75.	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श और कथा साहित्य में स्त्री दृष्टि	Mrs. S. Subha	423-425
76.	भूमिका द्विवेदी कृत 'किराये के मकान' उपन्यास में चित्रित महानगरीय जीवन की समस्याएँ	आर. डी. निर्मला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	426–430
77.	पर्यावरण विमर्श और 21वीं सदी के उपन्यास	संगीता कुमारी	431–435
78.	समकालीन साहित्य में किसान विमर्श	इ. जाक्कुलिन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	435–442
79.	इक्कीसवीं शताब्दी में उपन्यास–साहित्य के समक्ष चुनौतियाँ	डॉ. के आनंदी	443–446

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Sept. 2025 Page No. : 426-430

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भूमिका द्विवेदी कृत 'किराये के मकान' उपन्यास में चित्रित महानगरीय जीवन की समस्याएँ

आर. डी. निर्मला, शोधार्थी
डॉ. अनुराधा पाकलपाटि, शोध निर्देशिका व सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग, स्कूल ऑफ लैंग्वेजस,
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी – एडवांस्ड स्टडीज वीआईएसटीएएस, चेन्नई।

सार :–

भूमिका द्विवेदी के उपन्यास 'किराया के मकान' में कल्पना एक एकल अभिभावक है, जो अकेले ही अपने बच्चे प्रीत और रवि को संभालती है। उनका पालन पोषण करती है। उनको रहने के लिए एक मकान चाहिए। इस उपन्यास में किराए के मकान में रहने वाले लोग कौन–कौन सी समस्याओं का सामना करते हैं, यही दर्शाया गया है। एक अकेली महिला होने के कारण मकान मालिक के द्वारा पूछे गए संदेह से भरे प्रश्नों का उत्तर देना और शर्तों को मनना पड़ा। अन्य किराएदारों से होने वाली संकटों का सामना कर रही थी। प्रीत और उसके छोटे भाई रवि की पढ़ाई, प्रीत और मकान मालिक कर्नल साहब के तीसरे बेटे समीर के साथ प्रेम विवाह और उन दोनों का जीवन अलग से एक किराये के मकान में शुरू होने से कहानी खत्म होती है।

बीज शब्द : मकान, किराया, मकान मालिक, बेरोजगारी, समस्याएँ, कामकाजी महिला, एकल अभिभावक, किराएदार आदि।

भूमिका :

वर्तमान समय में महानगरों में रहने की आवास की कमी होती जा रही है। अपनी सुविधा के अनुसार घर न मिलने के कारण को समझौता करना पड़ता है। इन नगरों में रहने का स्थान मिलना बहुत कठिन है। खासकर अकेली माँ को कोई भी मकान देने के लिए तैयार नहीं होते हैं। महानगरों रोजगार के अवसर बहुत मिलते हैं लेकिन दूसरी ओर आर्थिक कठिनाइयाँ मानसिक तनाव भी पैदा करता है। 'किराये के मकान' उपन्यास के संदर्भ में लेखिका भूमिका द्विवेदी ने चित्रित किया है कि इस उपन्यास का मुख्य पात्र कल्पना और प्रीत को मकान की समस्या, अन्य किराएदारों से होने वाली की समस्याओं, नौकरी, बच्चों की परवरिश, सामाजिक समस्याएँ आदि से संघर्ष करती है। महानगरों में रहने के लिए एक सुरक्षित घर या मकान एक पहचान का प्रतीक होता है। लेकिन किराएदारी का जीवन इन सब से अलग रहता है। यही है इस उपन्यास का मूल भाव। दो बेरोजगार पात्रों के प्रेम कथा, किरायेदार जीवन की कठिनाइयों से जूझते हैं। हमारे देश के महानगरों में सिर्फ आर्थिक अवसरों का

उपलब्धियाँ नहीं है बल्कि सामाजिक असमानताओं, संघर्षों और विडंबनाएँ भी होते हैं। महानगर में रहने वाले मध्यवर्गीय लोग और सुरक्षा, किराएदारी, बेरोजगारी, लैंगिक असमानता, सांस्कृतिक विडंबना जैसी समस्याओं को सामना करते हैं।

महानगरों में किराए का मकान का संस्कृति :

औद्योगिकरण और शहरीकरण के कारण महानगरों की जनसंख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। लाखों लोग काम के लिए महानगरों में आते हैं। लेकिन यहाँ मकान की उपलब्धि उतनी नहीं है जितने लोग आते हैं। इसके परिणाम लोग किराए के मकान में रहने लगे। परिणाम स्वरूप किराए का मकान का संस्कृति विकसित होने लगी है। किराए का मकान स्थाई ठिकाना नहीं होता है। यह महानगरीय जीवन का हिस्सा है। परंतु महानगरों में काम के करण आकर जीने वाले लोगों को अजनबीपन और सुरक्षा की भावना में जीते हैं। एक साधारण मध्यवर्गीय व्यक्ति या परिवार महानगर में मकान पाने और रहने के लिए संघर्ष करते हैं।

'हालाँकि जब किराये का ये कमरा प्रीत ने काफी मशक्कत और सब्र के साथ खोजा था, उसे उम्मीद नहीं थी, इतने बड़े मकान का मालिक किराये पर मकान उठाएगा'।[1]

इन पंक्तियों से पता चलता है कि प्रीत बड़ी मुश्किल से किराए के लिए एक घर को ढूँढ निकाला, लेकिन मकान का मालिक उस छोटे से जगह के लिए ज्यादा पैसा मांग रहे थे।

महानगरों में किराएदार जीवन के प्रमुख समस्याएँ :

महानगरों में किरायेदारों को अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिसमें हम यह देख सकते हैं कि आवास की कमी, मकान मालिक द्वारा होने वाले उत्पीड़न, अत्यधिक किराया, इसके अलावा कई छिपे हुए खर्च और सुरक्षा जमा राशि, मकान मालिक का उत्पीड़न– कुछ मकान मालिक अपने किराएदारों के ऊपर अपना अधिकार जमाते हैं।

आर्थिक समस्या :

महानगरों में किराए के मकान कि आय बहुत अधिक होता है। महानगरों में नौकरी करने वाले मध्यवर्गीय व्यक्ति को अपने आय का बड़ा हिस्सा किराए में ही देना पड़ता है। दूसरा दबाव यह है कि हर साल किराए का बढ़ना अनिवार्य हो गया है। इस करण मध्य वर्ग में रहने वाले लोगों को महानगरों में जीवन यापन करना बहुत मुश्किल है। सस्ते और स्थिर आवास न मिलने के कारण, असुरक्षा और तनाव पैदा हो जाता है। पानी, बिजली जैसे बुनियादी सेवाओं में कमी होती है। काम और रहने की जगह के बीच में दूरी होने के कारण हर दिन की यात्रा में बहुत समय लगता है जिससे जीवन में अधिक कठिनाइयाँ बढ़ती जाती है। शहरों से दूर सस्ते दामों में किराए का मकान मिलने के कारण लोग अपने कामकाजी जगह की दूरी को परवाह न करके कुछ पैसे बचाने की कोशिश करते हैं।

"लेकिन वो तो इतना लालची निकला कि मकान की तो बात ही क्या, उसका बस चलता तो वो आस–पास की खाली सड़कों से भी किराया वसूल लेता।"[2]

किराएदार से ज्यादा रुपए किराए के पैसे के रूप में लेने के लिए मकान का मालिक कर्नल भी कम नहीं थे। उसे छोटे से कमरे के लिए वह और भी पैसा लेना चाहते थे।

कल्पना अपने आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर अपने बच्चों की सुरक्षा के लिए तीन सौ या तीन सौ

पचास भी किराए के रूप में देने के लिए तैयार हुई थी। आर्थिक स्थिति को संभालने के लिए शहरों में एक ही कमरे में अपना घर बसाते हैं। साथ ही महँगाई और पैसा वसूलते हुए मकान मालिकों का शोषण होते हैं।

किराए के मकान पर रहने के कारण परिवार पर भी अधिक असर पड़ता है। बच्चों की पढ़ाई में अस्थिरता और माहौल का बदलाव के कारण भी प्रभावित हो जाते हैं। लगातार मकान बदलने के कारण पारिवारिक जीवन में समस्याएँ पैदा होते हैं प्रीत अपनी माँ कल्पना को आर्थिक सहायता देने हेतु पढ़ाई के साथ–साथ काम करना चाहती है। उसके लिए कोशिश करती है, अखबारों में विज्ञापन देखकर एक बड़े विद्यालय में साक्षात्कार देने जाती है, पर उसके मन में यह शंका थी कि उसकी शैक्षणिक योग्यताएँ बाकी लोगों से कम थी। नौकरी मिलती है, लेकिन उसे विद्यालय का मालिक उसे पर शारीरिक शोषण करते हैं। जब प्रीत उसे विरोध करती है, तो उससे विद्यालय के मलिक ऐसे बताते हैं कि प्रीत से भी ज्यादा पढ़ी–लिखी महिलाओं के साथ और अन्य कर्मचारियों के साथ भी उन्होंने ऐसा ही व्यवहार किया है और प्रीत को भी अपने जाल में फसाने के लिए उसको गेस्ट हाउस में मीटिंग का नाटक रचाकर उसके साथ बुरे व्यवहार करने की कोशिश करते हैं यह आने वाले पंक्तियों में पता चलता है।

'अरे तुम तो बेकार में भड़क रही हो... तुम क्या समझती हो, इतने बड़े संस्थान में वो इतनी बढ़िया पोस्ट मिलना कोई बच्चों का खेल है, कि बस चार अच्छर बाँचे तुमने और बन गयी प्रशासनिक अधिकारी... अरे तुम जैसी इंटरपास की औकात ही क्या, तुमसे लाख दर्जे बेहतर लड़कियाँ अपनी डिग्रियाँ लिए रोजाना कितनी ही सुन्दर–सुन्दर लड़कियाँ आगे–पीछे घूमती रहती हैं मेरे. तुम तो खुशनसीब हो जो मैं एक चांस दे रहा हूँ तुम्हें. ...."[3]

उसे घटना के बाद प्रीत नौकरी छोड़कर घर में ही बच्चों को सिर्फ ट्यूशन लेती है। अपनी माँ की आर्थिक सहायता देती है। वह पहले ही दसवीं कक्षा तक बच्चों को घर में ट्यूशन पड़ता है तो उसको स्कूल में पढ़ना उतना मुश्किल नहीं है लेकिन उसके लिए आयु और शैक्षणिक योग्यता होना जरूरी है।

असुरक्षा और अपमान की समस्या :

किराए के मकान में रहने वाले किराएदार खुद को हमेशा कमजोर और अस्थायी होते हैं क्योंकि मकान मालिक को उनका कोई अधिकार नहीं देते हैं। उपन्यास के इन निम्नलिखित पंक्तियों से हमें मालूम होता है कि प्रीत अपनी माँ को भी बहुत बड़ा विश्व को छुपाया है वह यह है कि जहाँ पर वह काम करती थी उस विद्यालय के मालिक प्रीत के साथ बुरा व्यवहार किया, उससे अपना मन बचाकर प्रीत घर आ गई।

"लेकिन प्रीत ने ये दर्दनाक वाकया किसी को भी नहीं बताया। अपनी माँ को भी नहीं। उसे तो बस यही इतमीनान था कि उस राक्षस के हाथ से उसकी इज्जत बची रह गयी"।[4]

मकान का मालिक कभी भी किराएदार को अपने मकान से निकाल सकते हैं और छोटे–छोटे विषयों पर उनको अपमानित करते रहते हैं। इस उपन्यास में कर्नल साहब के दूसरे मंजिल के मकान के अन्य किराएदारिन मिस मालती जो सरकार आयकर अधिकारी की पत्नी के द्वारा किए अपमान को सहने वाली प्रीत को हम आने वाले उन पंक्तियों में देख सकते हैं। जब प्रीत अपने घर का आंगन साफ कर रही थी ऊपर से मिस मालती ने झाड़ू लगाकर कूड़े को नीचे डाल दिया जहाँ प्रीत सफाई कर रही थी तब प्रीत के पूछने पर मिस मालती ने अमीरी गरीबी का फर्क दिखाकर कल्पना और प्रीत को और उसके परिवार को भला बुरा कहा है।

"मिस मालती की तो अब अपनी इज्जत तकरीबन मिट्टी में मिली हुई दिखने लगी। उसने आव देखा ना ताव, आगे बढ़कर प्रीत को थप्पड़ मारने दौड़ी और चीखने लगी, 'चुप्प कमीनी लड़की... तू मुझे औकात दिखाएगी. ..तेरी ये मजाल... नीच, कमीनी, हरामजादी, रंडी... जाहिल दिखती हूँ मैं तुझे... अभी मजा चखाती हूँ तुझे...'।[5]

यहाँ प्रीत को मिस मलती ने बहुत बुरे शब्दों अपमान करती है। अपने बुरे हरकतों से प्रीत के दिल को चोट पहुँचती है। मिस मालती प्रीत की माँ कल्पना और बच्चों को भी बहुत गलत शब्दों का प्रयोग करके डाँटकर अपमान करती है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्या :

महानगरों में अन्य अलग–अलग संस्कृतियों से संबंधित भाषण और परंपराओं से संबंधित लोग एक साथ रहते हैं। किराएदार और मकान मालिक और अन्य किरायेदारों के साथ महानगरों के जीवन शैली, पहनावे, खानपान, विचारधारा आदि में टकराव भी हो जाती है। महानगरों में कई बार जाति धर्म और वर्ग के आधार पर ही स्वीकार या अस्वीकार किया जाता है। आधुनिक महानगरों में भी जाति, धर्म के नाम पर भेदभाव आज भी है। हर एक व्यक्ति को अपना खुद का मकान न होने की भावना उसकी मानसिक एवं भावनात्मक अस्थिरता में डाल देती है। एक तरह का असुरक्षा उसके मन में हमेशा रहता है। अपना खुद का घर न होने का खालीपन उसके आत्मसम्मान को चोट पहुँचाता है। कई बार यह अकेलापन और अपमान, मानसिक तनाव को जन्म देता है।

मकान मालिक और अन्य किराएदारों से संबंधित समस्याएँ :

हमारे देश के महानगरों में मकान मालिक और किराएदार का रिश्ता अच्छा नहीं रहता है। मकान का मालिक हमेशा किराएदार के घर का पानी, बिजली, यहाँ तक कि उनके घरेलू मामलाओं तक दखल देते रहते हैं।

यहाँ इस उपन्यास में देख सकते हैं कि मकान मालिक अमीर किराएदारों और गरीब किराएदारों में कैसे फर्क दिखाते हैं। अमीर लोगों को इज्जत और सम्मान से बात करना और व्यवहार करना और गरीब लोगों के साथ बुरे व्यवहार करना, इज्जत न देना, यह सब इस उपन्यास में है। कर्नल अपने दो किरायेदारों में भेदभाव न करने का दिखावा करते हैं पर वास्तव में भेदभाव करते हैं। यह हम आने वाले पंक्तियों में देख सकते हैं।

"कर्नल को मिस मालती से ये कहना कभी नहीं भूलता था कि वो उस पूरे भूखंड को एकदम अपना ही घर समझ कर रहे, उसे अमीरी–गरीबी या मकान–मालिक और किरायेदार जैसे भेदभाव पर जरा भी यकीन नहीं।

लेकिन साथ ही साथ दूसरी तरफ यही वो शख्स था, जो कल्पना शर्मा के साथ पूरी अमीरी और गरीबी रेखा का साफ–साफ विभाजन करके ही व्यवहार तय करता आया था।"[6]

इन निम्नलिखित पंक्तियों के द्वारा मिस मालती ने प्रीत को और उसके परिवार को, उसके माँ और छोटे भाई को भी कितना गलत, बुरे शब्दों से डाँटती है। मिस मालती अपने अन्य किराएदार कल्पना प्रीत के परिवार को उनकी स्थिति को और उनकी गरीबी को देखकर उनको बहुत सताती है।

"आज मिस मालती प्रीत को धूल चटाने पर आमादा थी। और प्रीत की कोई भी प्रतिक्रिया ना पाकर, मिस मालती के अन्दर पकता लावा और ज्यादा उबाल मारने लगा, दूसरी किस्त निकली, 'ऐई लड़की... तुस्से ही कह रही हूँ... सुन इधर... दिमाग के साथ साथ कान भी जवाब देने लगे हैं क्या तेरे... ये बाकी की सीढ़ी कौन बटोरेगा. ... तेरा बाप?'[7]

छोटे घर में रहने वालों को उनके हालात या स्थिति को देखकर उनकी गरीबी पर मिस मालती जैसी अन्य किराएदारों को उच्च स्तर या अमीर लोग सताते हैं।

निष्कर्ष :

महानगरीय जीवन में किराए का मकान केवल आवासीय समस्या नहीं है बल्कि मध्यवर्गीय जीवन की असुरक्षा अपमान और सत्ता का प्रतीक है। इस उपन्यास के द्वारा किराएदार जीवन हमें यह सिखाता है कि महानगरों के पीछे बहुत गहरी पीड़ा और असुरक्षा की भावना छिपी रहती है। अकेलापन भेदभाव आर्थिक दबाव और स्त्री अस्तित्व की तलाश आदि भी है। हर व्यक्ति को स्थिर और सम्मानजनक रहने का स्थान या आवास उपलब्ध होना चाहिए। जब तक वह नहीं मिलता तब तक महानगरीय जीवन उन लोगों के लिए अधूरा बन जाता है। यह उपन्यास महानगरीय जीवन की उन अदृश्य और उपेक्षित कठिनाइयों को सामने लाता है, जिसमें हर रोज लाखों लोग विशेषकर मध्यवर्गीय परिवार में रहने वाले महिलाएँ होते हैं। यह मानसिक और भावनात्मक संकटों को उत्पन्न करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

बाबासाहेब कोकाटे – हिंदी साहित्य में महानगरी नारी, समांथा प्रकाशन 2003

1. भूमिका द्विवेदी 'किराये का मकान' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन 2019 (पृष्ठ संख्या–27)
2. भूमिका द्विवेदी 'किराये का मकान' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन 2019 (पृष्ठ संख्या–27)
3. भूमिका द्विवेदी 'किराये का मकान' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन 2019 (पृष्ठ संख्या–43)
4. भूमिका द्विवेदी 'किराये का मकान' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन 2019 (पृष्ठ संख्या–48)
5. भूमिका द्विवेदी 'किराये का मकान' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन 2019 (पृष्ठ संख्या–59)
6. भूमिका द्विवेदी 'किराये का मकान' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन 2019 (पृष्ठ संख्या–65)
7. भूमिका द्विवेदी 'किराये का मकान' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन 2019 (पृष्ठ संख्या–58)